[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.............

C

Sr. No. of Question Paper : 4430

Unique Paper Code : 52051407

Name of the Paper : Hindi 'A'

Name of the Course : B.Com. (Prog.)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कहानी अथवा निबंध की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (12)

2. 'नमक का दरोगा' कहानी के आधार पर मुंशी वंशीधर का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'धूप का एक टुकड़ा' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

3. 'करुणा' निबंध का सन्देश लिखिए। (12)

अथवा

'देवदारु' निबंध की भाषा शैली की विशेषताएं लिखिए।

4. 'वैष्णव की फिसलन' निबंध में निहित व्यंग्य पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'जिस लाहौर नइ देख्या वो जन्मया नइ' नाटक की मूल संवेदना लिखिए।

5. निम्नलिखित में से **किन्ही दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे, बेटा घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियां हैं, वह घास - फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूं। न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब तुम्हीं घर के मालिक मुख्त्यार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूंढना जहां ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते फिर लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ 'सोता' है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती।

(ख) मरने से पहले हममें से हर एक को यह छूट मिलनी चाहिए। कि हम अपनी चीर-फाड़ खुद कर सकें। अपने अतीत की तहों को प्याज के छिलकों की तरह एक-एक करके उतारते जाएं......... आपको हैरानी होगी कि सब लोग अपना अपना हिस्सा लेने आ पहुंचेंगे,मां-बाप, दोस्त, पति .... सारे छिलके दूसरों के लिए आखिर की सूखी डंठल आपके हाथ में रह जाएगी, जो किसी काम की नहीं, जिसे मृत्यु के बाद जला दिया जाता है, या मिट्टी के नीचे दबा दिया जाता है देखिए, अक्सर कहां जाता है कि हर आदमी अकेला मरता है। मैं यह नहीं मानती।

(ग) मनुष्य ज्यों ही समाज में प्रवेश करता है, उसके सुख और दुख का बहुत सा अंश दूसरे की क्रिया या अवस्था पर अवलंबित हो जाता है उसके मनोविकारों के प्रवाह तथा जीवन के विस्तार के लिए अधिक क्षेत्र हो जाता है। वह दूसरों के दुख से दुखी और दूसरों के सुख से सुखी होने लगता है। अब देखना यह है कि दूसरों के दुख से दुखी होने का नियम जितना व्यापक है क्या उतना ही दूसरों के सुख से सुखी होने का भी। मैं समझता हूं, नहीं। हम अज्ञात कुलशील मनुष्य को सामने देख हम अपना दुखी होना तब तक के लिए बंद नहीं रखते जब तक कि यह न मालूम हो जाएं कि वह कौन है, कहां रहता है और कैसा है; यह और बात है कि जानकर कि जिसे पीड़ा पहुंच रही है उसने कोई भी भारी अपराध या अत्याचार किया है, हमारी दया दूर या कम हो जाए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) कहानी के तत्व

(ख) प्रेमचंदयुगीन उपन्यास की विशेषताएं

(ग) नाटक की संवाद – योजना